मनुष्य का पूर्वजन्म, वर्तमान और भविष्य: वेद, शास्त्र और सिद्धांतों का विस्तृत विश्लेषण

लेखक : जयसिंह

Jagpura@yahoo.com

1. पूर्वजन्म: कर्म, पुनर्जन्म और शास्त्रीय आधार

(अ) वैदिक स्रोत

1. **ऋग्वेद (10.16.3):**
   - **"पुनः पुनर्जननम्" (पुनर्जन्म की प्रक्रिया)**
   - **अर्थ: आत्मा जन्म-मृत्यु के चक्र में बंधी रहती है।**
   - **प्रमुख बिंदु: मृत्यु के पश्चात आत्मा कर्मों के आधार पर नया शरीर ग्रहण करती है।**
2. **बृहदारण्यक उपनिषद (4.4.3-6):**
   - **"यथा कर्म यथा चरति तथैव भवति..."**
   - **अर्थ: मनुष्य के कर्म उसके भविष्य का निर्माण करते हैं; सत्कर्म से सुख, पापकर्म से दुख।**
   - **प्रमुख बिंदु: पूर्वजन्म के कर्म वर्तमान जीवन की परिस्थितियों को निर्धारित करते हैं।**
3. **महाभारत (शांति पर्व, 279):**
   - **"यद् भावति तत् कर्मणि संनादति"**
   - **अर्थ: विचार और भावनाएँ कर्मों को प्रभावित करते हैं।**
   - **उदाहरण: पूर्वजन्म का क्रोध वर्तमान में भी प्रकट हो सकता है।**

(ब) पुनर्जन्म की प्रक्रिया

- **गरुड़ पुराण (पूर्व खंड, 15):**
  - **मृत्यु के बाद आत्मा यमलोक में जाती है, जहाँ कर्मों का हिसाब होता है।**
  - **84 लाख योनियाँ: कर्मों के आधार पर आत्मा को मनुष्य, पशु, पक्षी आदि योनियाँ प्राप्त होती हैं।**
  - **कर्माशय: अधूरे कर्म अगले जन्म में फल प्रदान करते हैं।**

2. वर्तमान जीवन: स्वतंत्र इच्छा और नियति

(अ) त्रिकाय सिद्धांत

1. **स्थूल शरीर:**
   - **स्रोत: तैत्तिरीय उपनिषद** (2.1-5)
   - **विशेषता: पंच तत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) से निर्मित, अन्नमय कोश।**
2. **सूक्ष्म शरीर:**
   - **स्रोत: कठोपनिषद** (1.3.3-4)
   - **विशेषता: मनोमय (मन), विज्ञानमय (बुद्धि) कोश, और संस्कारों का भंडार।**
   - **प्रमुख बिंदु: पूर्वजन्म के संस्कार सूक्ष्म शरीर में संग्रहीत रहते हैं।**
3. **कारण शरीर:**
   - **स्रोत: माण्डूक्य उपनिषद** (1.7)
   - **विशेषता: अविनाशी आत्मा, कर्मफल की वाहक।**

(ब) वर्तमान कर्म की भूमिका

- **भगवद्गीता (2.47):**
  - **"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"**
  - **अर्थ: कर्म करो, फल की इच्छा मत रखो।**
  - **प्रभाव: निष्काम कर्म से कर्मबंधन समाप्त होता है।**
- **मनु स्मृति (12.8-11):**
  - **कर्म तीन प्रकार के: सात्विक, राजसिक, तामसिक।**
  - **प्रभाव: सात्विक कर्म मोक्ष की ओर ले जाते हैं, तामसिक कर्म दुखदायी।**

3. भविष्य: मोक्ष और शाश्वत सत्य

(अ) चार पुरुषार्थ

1. **धर्म: नैतिकता और कर्तव्य (वेदों पर आधारित)।**
2. **अर्थ: सांसारिक समृद्धि (नैतिक नियमों के अंतर्गत)।**
3. **काम: संयमित इच्छापूर्ति।**
4. **मोक्ष: आत्मा की मुक्ति (उपनिषदों का अंतिम लक्ष्य)।**

- **मुंडक उपनिषद (3.2.9):**
  - **"ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति" – ब्रह्मज्ञान से आत्मा ब्रह्म में लीन हो जाती है।**

(ब) भविष्य जानने के उपाय

1. **ज्योतिष (वेदांग):**
   - **स्रोत: वृहत्पाराशर होरा शास्त्र**
   - **प्रक्रिया: ग्रह-नक्षत्रों और कुंडली के आधार पर भविष्यवाणी।**
2. **स्वप्न विज्ञान (अथर्ववेद 16.5):**
   - **संकेत:**
     - **देव दर्शन = शुभ।**
     - **रक्त/काली वस्तु = अशुभ।**
3. **अंतःप्रज्ञा (योग दर्शन):**
   - **स्रोत: पतंजलि योग सूत्र (3.33)**
   - **प्रक्रिया: ध्यान द्वारा भविष्य की अनुभूति।**

4. पूर्वजन्म और भविष्य का ज्ञान

(अ) योग और सिद्धियाँ

1. **पतंजलि योग सूत्र (3.18):**
   - **"संस्कारसाक्षात्करणात् पूर्वजातिज्ञानम्"**
   - **अर्थ: संस्कारों का साक्षात्कार पूर्वजन्म का ज्ञान देता है।**
2. **टेलीपैथी:**
   - **स्रोत: योग सूत्र (3.19) – "प्रत्ययस्य परचित्तज्ञानम्"**
   - **प्रक्रिया: एकाग्रता और ध्यान से मन को पढ़ने की क्षमता।**
   - **उदाहरण: संजय को कृष्ण द्वारा दिव्य दृष्टि (महाभारत)।**

(ब) वैदिक प्रमाण

1. **अथर्ववेद (10.7.38):**
    - **"अविज्ञातं विजानाति..." – ऋषियों को अतीत-भविष्य का ज्ञान था।**
2. **ऋग्वेद (1.164.39):**
    - **तात्पर्य: ऋषि दीर्घतमा ने आत्मा और समय के रहस्यों का वर्णन किया।**

5. टेलीपैथी और शास्त्र

1. **शिव संहिता (3.45):**
    - **योगी विचारों को पढ़ सकते हैं।**
2. **विष्णु पुराण (6.7.30):**
    - **कृष्ण ने अर्जुन को टेलीपैथी से गीता का उपदेश दिया।**
3. **रामचरितमानस (सुंदरकांड):**
    - **हनुमान ने सीता की मानसिक पुकार सुनी।**

6. व्यावहारिक उपाय

1. **सत्संग (भागवत पुराण 11.12.1-7):**
    - **संतों की संगति से आत्मज्ञान और पूर्वजन्म के संस्कार जागृत होते हैं।**
2. **तपस्या (मनु स्मृति 11.236):**
    - **मौन, वनवास, अग्नि साधना से आत्मशुद्धि।**
    - **उदाहरण: विश्वामित्र की तपस्या।**
3. **मंत्र साधना (अथर्ववेद 19.14.1):**
    - **गायत्री मंत्र: बुद्धि और आत्मज्ञान।**
    - **महामृत्युंजय मंत्र: कर्मबंधन से मुक्ति।**

7. आधुनिक विज्ञान और शास्त्र

1. **डॉ. इयान स्टीवेन्सन:**
    - 2,500+ **पुनर्जन्म के मामलों का अध्ययन।**
    - **निष्कर्ष: जन्मचिह्न और स्मृतियाँ पुनर्जन्म का प्रमाण हो सकती हैं।**
2. **क्वांटम भौतिकी:**
    - **चेतना (आत्मा) अविनाशी ऊर्जा है।**

पास्ट लाइफ रिग्रेशन (PLR): पिछले जन्म की यादें कैसे जानें?

पास्ट लाइफ रिग्रेशन (PLR) **एक ऐसी तकनीक है, जो हिप्नोसिस या गाइडेड मेडिटेशन के माध्यम से पिछले जन्म की यादों को उजागर करने में मदद करती है। यह आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया व्यक्ति को अपने पूर्वजन्म के अनुभवों तक ले जाती है।**

1. PLR क्या है?

PLR एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें गहरी छूट (रिलैक्सेशन) की अवस्था में व्यक्ति का अवचेतन मन सक्रिय होता है। इस दौरान पिछले जन्म की छिपी यादें सामने आ सकती हैं।

2. PLR कैसे काम करता है?

- हिप्नोथेरेपी: प्रशिक्षित थेरेपिस्ट सम्मोहन के जरिए अवचेतन तक पहुँच बनाता है।
- गाइडेड मेडिटेशन: ध्यान और विजुअलाइजेशन से पिछले जन्म के दृश्य देखे जा सकते हैं।
- स्वयं PLR: ऑडियो/वीडियो गाइड की मदद से व्यक्तिगत प्रयास।

3. PLR से क्या जान सकते हैं?

- पूर्वजन्म की पहचान: आप कौन थे, कहाँ रहते थे।
- रिश्तों का कारण: वर्तमान जीवन के जुड़ाव या तनाव का मूल।
- डर या फोबिया: अनजाने डर का संबंध पिछले जन्म से।
- प्रतिभाएँ: जन्मजात कौशल का स्रोत।

4. PLR करने के तरीके

(A) थेरेपिस्ट के साथ

- अनुभवी PLR विशेषज्ञ के साथ सत्र लें।
- यह सबसे सुरक्षित और प्रभावी तरीका है।

(B) स्वयं PLR

1. शांत स्थान पर बैठें या लेटें।
2. गहरी साँसें लें और रिलैक्सेशन ऑडियो सुनें।
3. मन को खुला रखें और दृश्यों/भावनाओं पर ध्यान दें।

5. सावधानियाँ

- मानसिक रूप से संवेदनशील लोग अकेले PLR न करें।
- दर्दनाक यादों के लिए थेरेपिस्ट से संपर्क करें।
- यादों को ज्यादा गंभीरता से न लें; कुछ कल्पना भी हो सकती है।

6. PLR के लाभ

- ट्रॉमा से मुक्ति: पिछले जन्म के डर या समस्याओं का समाधान।
- रिश्तों में सुधार: तनाव के कारणों को समझना।
- प्रतिभा विकास: जन्मजात कौशल को निखारना।

7. PLR के दौरान अनुभव

- दृश्य: ऐतिहासिक स्थान, लोग, वेशभूषा।
- संवेदनाएँ: शारीरिक या भावनात्मक अनुभूति।
- आवाज़ें: अज्ञात भाषाएँ, ध्वनियाँ।
- ज्ञान: बिना सीखे कौशल या जानकारी।

8. वैज्ञानिक दृष्टिकोण

- पारंपरिक विज्ञान PLR को पूरी तरह स्वीकार नहीं करता।
- डॉ. इयान स्टीवेन्सन के शोध में पुनर्जन्म के 2,500+ मामले दर्ज।
- कुछ बच्चों के जन्मचिह्न पूर्वजन्म के घावों से मेल खाते हैं।

9. PLR के प्रकार

1. **स्वतःस्फूर्त: अचानक सपने या डीजा वू।**
2. **निर्देशित: थेरेपिस्ट के साथ सत्र।**
3. **समूह PLR: वर्कशॉप में सामूहिक अनुभव।**
4. **लाइट ट्रांस: हल्का सम्मोहन।**

10. PLR के बाद कदम

- **अनुभवों को डायरी में लिखें।**
- **दृश्यों/प्रतीकों का अर्थ समझें।**
- **नकारात्मक पैटर्न को दूर करें।**
- **प्रतिभाओं को विकसित करें।**

11. PLR के विकल्प

- **जन्म कुंडली विश्लेषण।**
- **अकाशिक रिकॉर्ड्स रीडिंग।**
- **सपनों का विश्लेषण।**
- **अंतर्ज्ञान पर ध्यान।**

12. सत्यता की जाँच

- **ऐतिहासिक तथ्यों से मिलान करें।**
- **स्थान/युग पर शोध करें।**
- **शारीरिक प्रतिक्रियाओं को नोट करें।**
- **विशेषज्ञ से सत्यापन करवाएँ।**

13. PLR के फायदे

- **आत्म-जागरूकता बढ़ती है।**
- **ट्रॉमा से जुड़े रोग ठीक हो सकते हैं।**
- **रिश्तों और आध्यात्मिक प्रगति में सुधार।**

सावधानी: PLR शक्तिशाली है, अतः इसे सावधानी और प्रशिक्षित मार्गदर्शक के साथ करें। मानसिक संवेदनशीलता होने पर अकेले प्रयास न करें।

निष्कर्ष

- **मोक्ष: शास्त्रों का अंतिम लक्ष्य।**
- **साधना मार्ग: कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग।**
- **टेलीपैथी: योग की सिद्धि, शुद्ध मन से उपयोगी।**

"यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे" – सूक्ष्म शरीर और ब्रह्मांड एक हैं। पूर्वजन्म, वर्तमान और भविष्य आत्मा की यात्रा के चरण हैं।